दुआओं का महत्त्व

दुआयें हमारे जीवन को ऊँचाई पर पहुँचाने में लिफ़्ट की भूमिका अदा करती हैं। जो सर्व को दुआयें देता है तथा सर्व की दुआयें लेता है उसका ही जीना सार्थक है। कई बार तो ये दुआयें दवा से भी तीव्रगति से कार्य करती हैं। बद्दुआ या अशुभ कामना, मनुष्य के लिए श्राप बन जाती है। इसके विपरीत, दुआओं की शक्ति मनुष्य को कम परिश्रम में अधिक सफलता प्राप्त कराती है। दुआओं से भरा जीवन सदा खुशहाल व निश्चिंत रहता है, अत: हमें दुआ के महत्त्व को समझकर उसका प्रयोग करना चाहिए।

दुआ का अर्थ – मानव की मनोवृत्ति में सामान्यत: दो प्रकार की भावनाओं का समावेश होता है। एक तो शुभ या श्रेष्ठ भावना तथा दूसरी अशुभ या दुर्भावना। दिल की शुभभावना मानव को देवतुल्य बना देती है। जो जीवन के उतार-चढ़ाव में भावनाओं को श्रेष्ठ रखता है तथा हर अच्छे व बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति के प्रति भी शुभ भावनाओं को जारी रख पाता है, वह ही महान कहलाता है। वह सर्व का प्रिय बन जाता है। दुआ हमारी आंतरिक नि:स्वार्थ भावनाओं का प्रतिफल है। दुआ आपसी भाईचारे का प्रतीक है। दुआ मानवता का उत्कृष्ट लक्ष्य है और सदा दुआ देने वाला ही सच्चा दाता कहलाता है।

दुआ कैसे मिलती है – नि:स्वार्थ व श्रेष्ठ कर्म करके हम आत्माओं की दुआएँ प्राप्त कर सकते हैं। समय पर किसी की मदद करके, किसी बीमार व्यक्ति की सेवा से, ज्ञान के मीठे बोल से, किसी के मन को सच्ची शांति व खुशी देकर, अपने सद्व्यवहार से, किसी को परमात्म-स्नेह की अनुभूति कराके, किसी को उसकी बुरी आदतों से मुक्ति दिलाकर तथा किसी के संबंधों में सुधार लाकर हम दुआएँ कमा सकते हैं। जब हमारे व्यवहारिक जीवन में दिव्य गुण, स्वभाव में नम्रता, सहनशीलता, वाणी में मधुरता, चेहरे पर हर्षितमुखता आदि आ जाते हैं तो भी हम सर्व की दुआओं के पात्र बन सकते हैं।

दुआयें हम क्यों दें – इस संसार का एक शाश्वत नियम है कि हम जो देंगे वही प्राप्त करेंगे और कर्म का सिद्धांत भी यही कहता है कि 'कर भला तो हो भला'। अत: मानव के लिए आवश्यक है कि वह दुआओं की ही लेन-देन करे, यही पुण्य की चाबी है। अगर हम किसी का भला नहीं कर सकते अथवा कोई प्रकार से मदद नहीं कर सकते तो कम-से-कम उसका बुरा तो न सोचें। क्या हम अपने मन के किसी कोने में उस व्यक्ति के लिए थोड़ी-सी भी शुभ भावना नहीं रख सकते? बस इतनी-सी कला हमारे में आ जाए तो भी हमारा भला निश्चित है। हम जिसके लिए जैसा सोचते हैं, वो हमारे लिए वैसा ही बन जाता है। अत: किसी बुरे के प्रति लगातार अच्छा सोच भी उसे अच्छा बना देता है, उसमें स्व-अनुभूति की शक्ति आ जाती है।

दुआयें विशेष किसके लिए – अक्सर करके हम उनके प्रति ही शुभ भावना रखते हैं जो हमारे प्रति शुभ सोचता है अथवा जो हमारे साथ ठीक व्यवहार करता है। परंतु अच्छे के लिए अच्छा सोचना मात्र ही महानता नहीं है। जिस प्रकार बीमार को दवा की आवश्यकता होती है, स्वस्थ इंसान को नहीं। उसी प्रकार, संसार में जो भी विकारों की पीड़ा से ग्रसित है, ईर्ष्या, द्वेष, नफरत या घृणा की भावना से भरपूर है, ऐसे मानव के प्रति भी भरपूर आंतरिक शुभ-भावना रखनी है। दिल की दुआयें ऐसी संजीवनी बूटी हैं, जो मानव में आत्म-जागृति लाकर उसमें सकारात्मक विचारों का संचार करती हैं, उसे सदाचार सिखलाती हैं। अत: स्वयं को प्रेम के सागर परमपिता की संतान प्रेमस्वरूप समझकर हर मनुष्यात्मा को आत्मिक शुभ भावना व दुआयें प्रदान करते हुए, विश्व में प्रेम, एकता व सद्भावना की लहर फैलानी हैं।

❑❑